ग्राम विकास नव युवक मण्डल लापोडिया

टेलीफोन 0141–2723732, मोबाइल नं. 9928825503
वेब – www.gvnml.org ईमेल– gvnml@gvnml.org

संग्राम सिह	लक्ष्मण सिह	ओमप्रकाश सांखला
अध्यक्ष	सचिव	वरिष्ठ परियोजना प्रबन्धक

“धरती माँ ”
प्रकृति ही ईश्वर है।

पेड लग रहे है, पत्ते गिर रहे है।
घास आ रहा है, गायें चर रही है।
गोबर हो रहा है, मिट्‌टी बन रही है।
मिट्‌टी पानी हरियाली से जीवन चल रहा है।
इस धरा में ही वापस समा रहा है।
इस चक्र में हम सब लग रहे है।

धरती से कोई बड़ा नहीं –
नभ से कोई उंचा नही।

गौचर और गाय

गौचर

अतिक्रमण

क्या हम दूध पी पायेंगें ?

खन्न

भू–क्षरण

गौचर

पलायन एक बड़ी समस्या

रोजगार के लिए पलायन

गौचर

उजड चुके गौचर को फिर से हरा-भरा करने का दृढ संकल्प

चौका सिस्टम

गोचर

Outline of CHAUKA SYSTEM

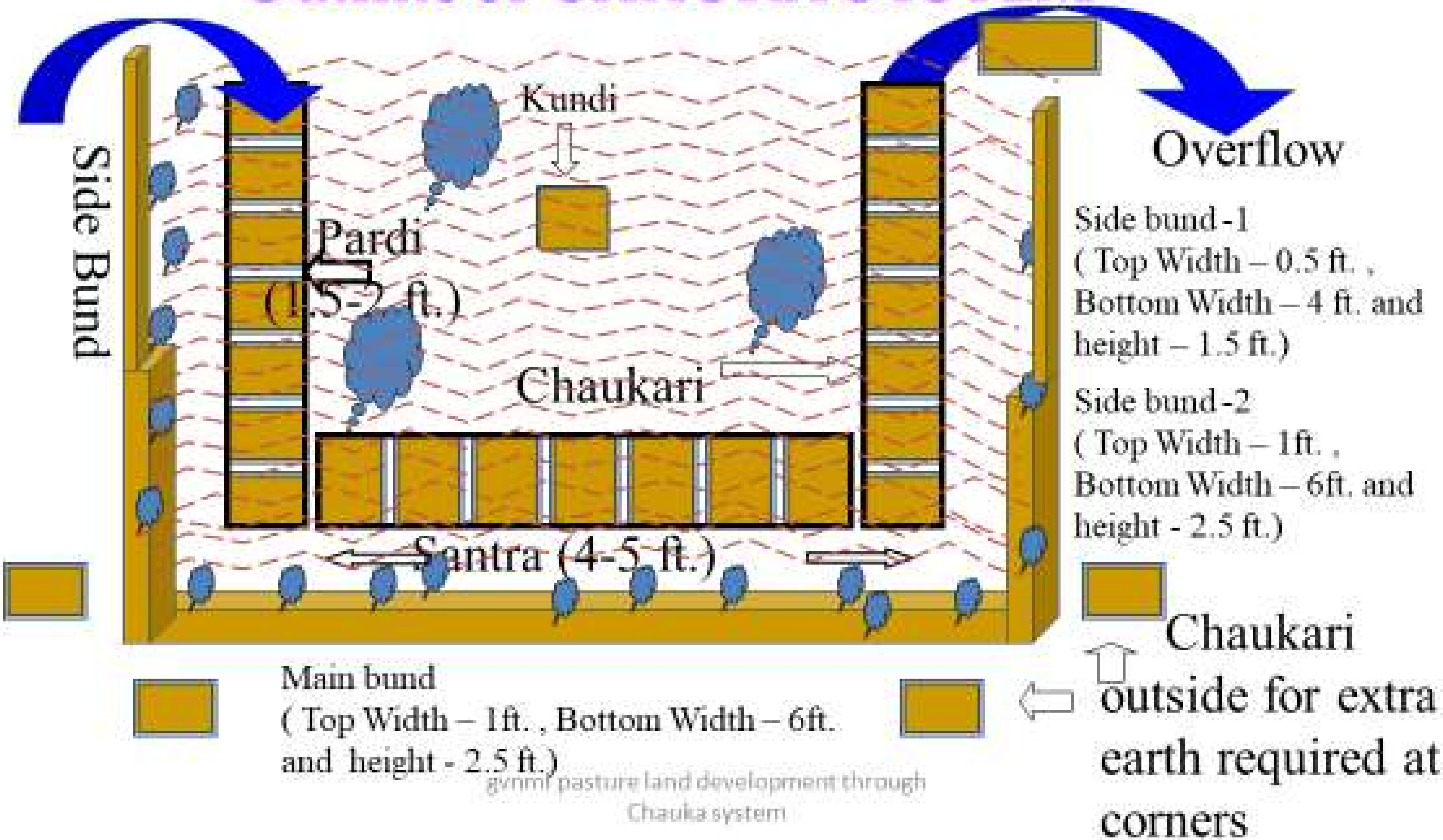

gvnml pasture land development through Chauka system

जमीन के अनुरूप - चौका के स्वरूप

गोचर

For undulating land

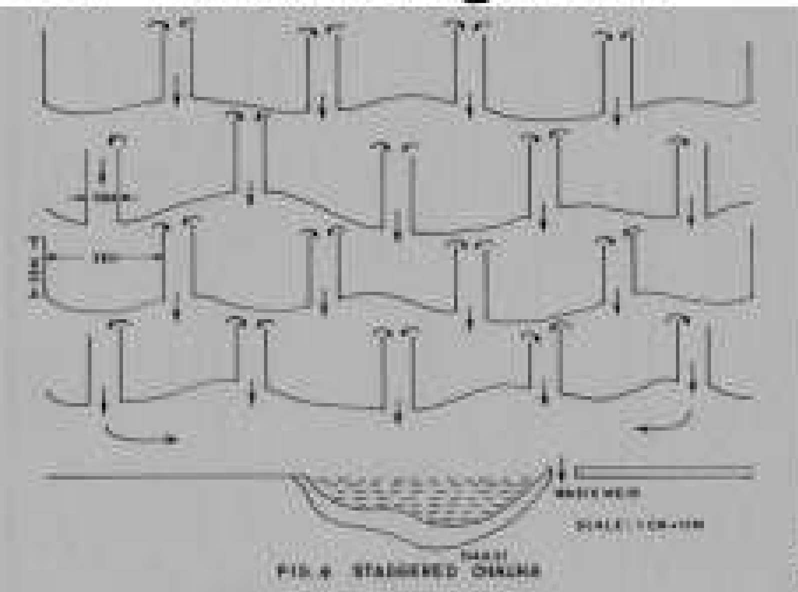

For minimum slope land

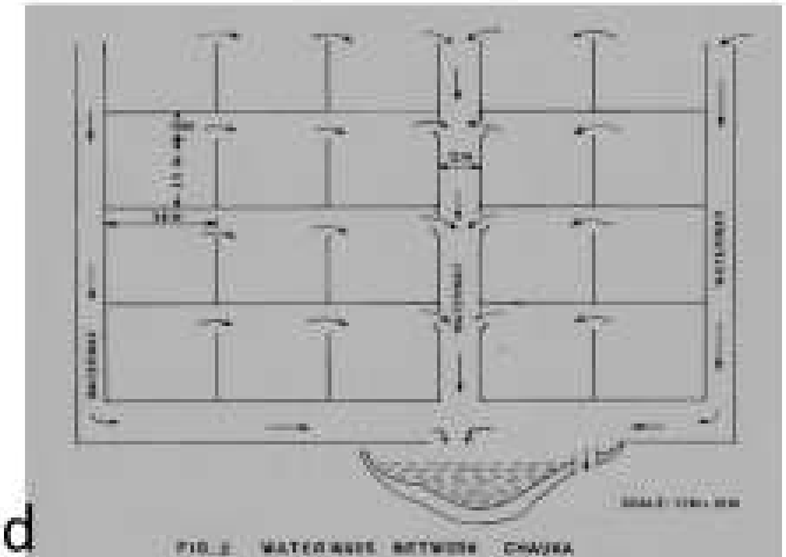

For even slope land

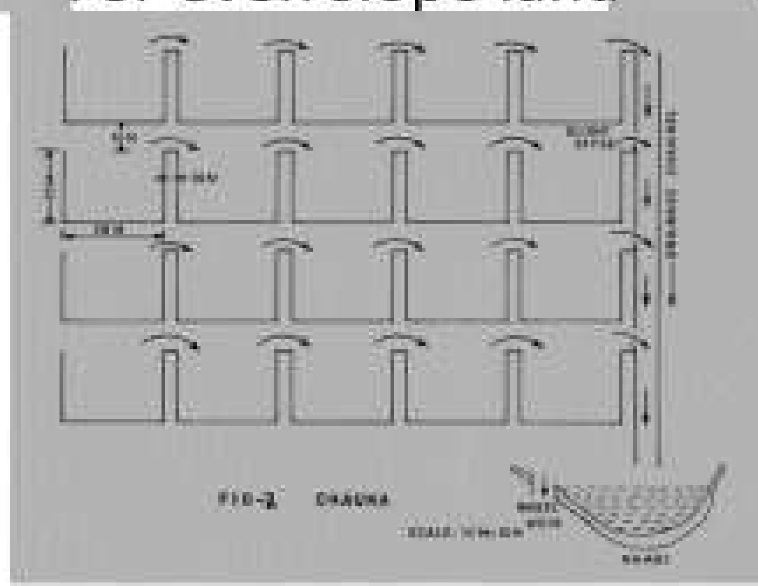

गोचर

गौचर का प्रसाद बांटता, लापोडिया

गौचर

गौचर ने संवारा जीवन

गिर नस्ल की गाय को बढ़ावा मिल रहा है, जो एक गाय दिन में 14 लीटर तक दूध देती है।

प्रत्येक परिवार 10,000 से 50,000 रू मासिक मुल्य का दूध देते है।

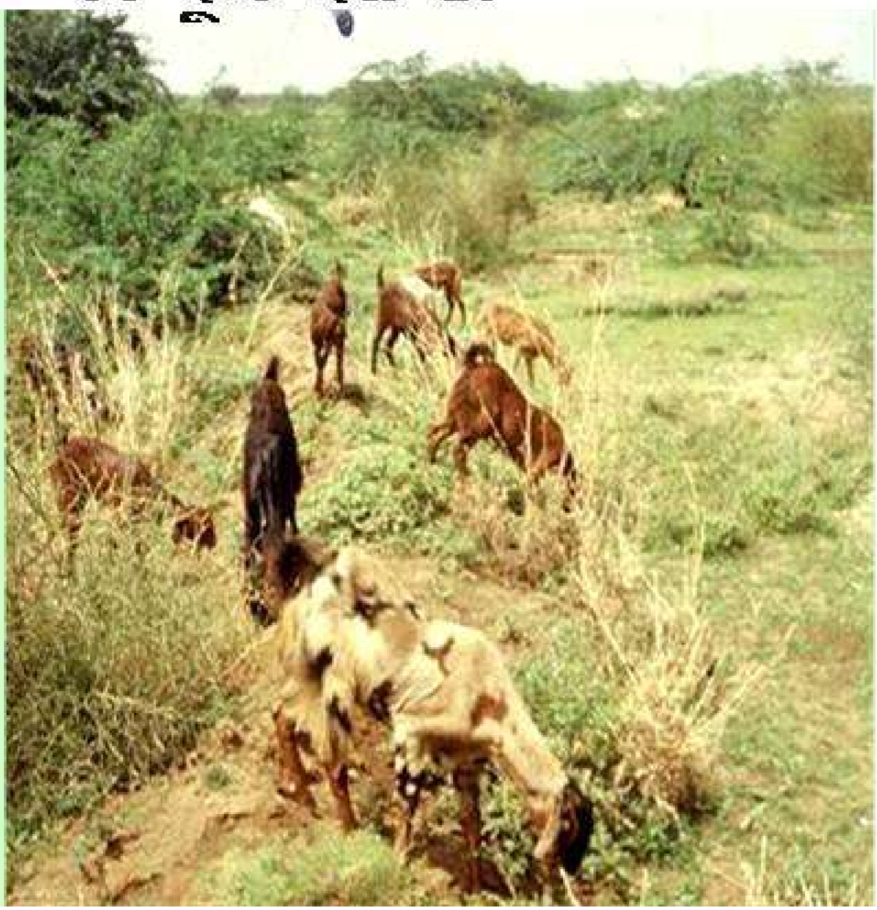

- मानव व पशु पलायन अब नही होता है।
- भेड बकरियो के पालन में 348 प्रतिशत वृद्धि है।
- चौका प्रणाली से विकसित चारागाह से परिवार की कुल आय में 39 प्रतिशत का योगदान है।

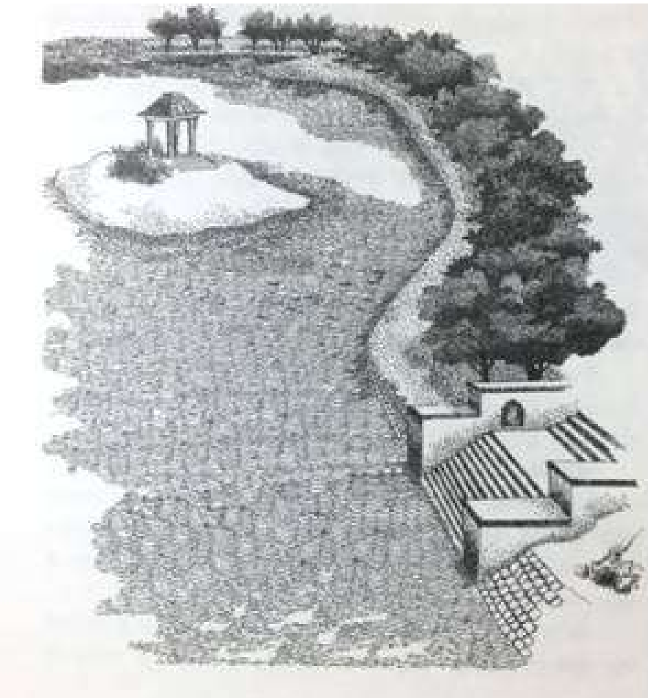

जीवन और तालाब

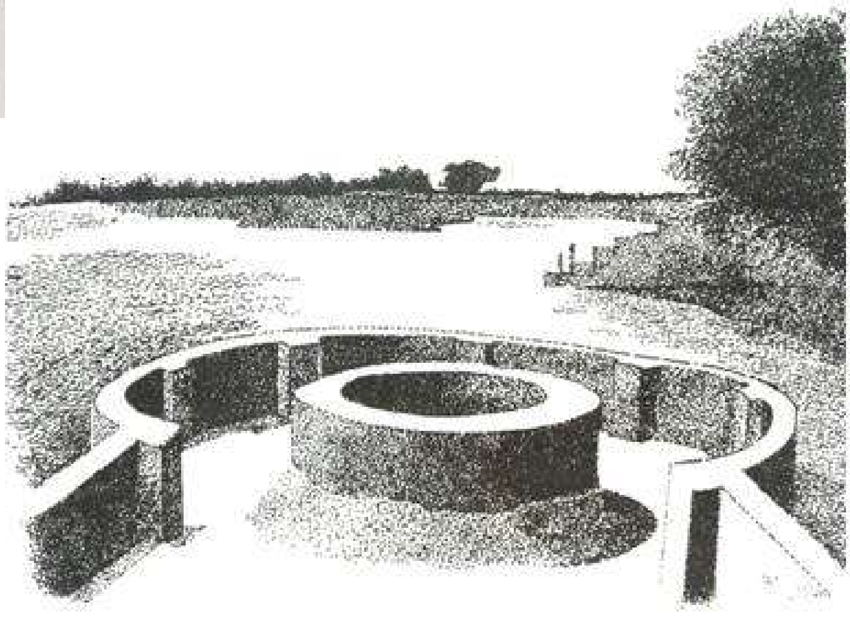

हमारे अपने सागर

जीवन और तालाब

फूल सागर

देव सागर

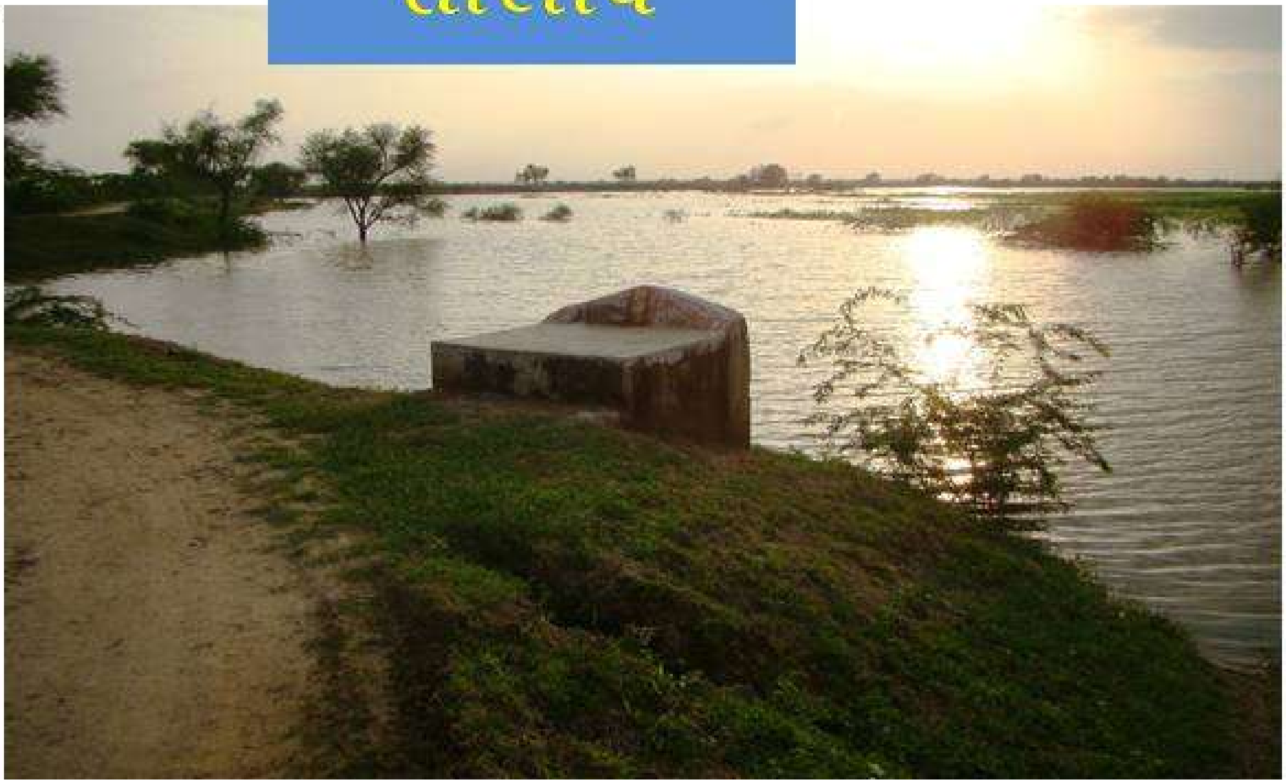

अन्न सागर

जीवन और तालाब

जीवनदायी नाड़ियां

तीन धाम नाड़ी

जंगल हॉल

जीवन और तालाब

एक तालाब से दूसरे तालाब को जाता हुआ पानी

जीवन और तालाब

वन्य जीवों व मवेशियों के लिये पेयजल

पेयजल स्रोत – जल होज (रेम्प वेल)

जीवन और तालाब

इन्सानों की प्यास बुझाता वर्षा जल संग्रहण टांका

फसलों की प्यास बुझाता – खेत टांका

जल उपलब्धता व गुणवत्ता में हुआ सुधार

जीवन और तालाब

पेयजल गुणवत्ता के मात्रक	पुरानी स्थिती	आज की स्थिती
फ्लोराइड (पी पी एम)	2.1	0.95
नाईट्रेट (पी पी एम)	30.5	17.5
अम्लीयता/क्षारीयता (pH)	8.73	8.0

जनसत्ता

नई दिल्ली : मंगलवार, २२ मई, २००१

सरकारी टैंकर का मोहताज नहीं है लापोरिया

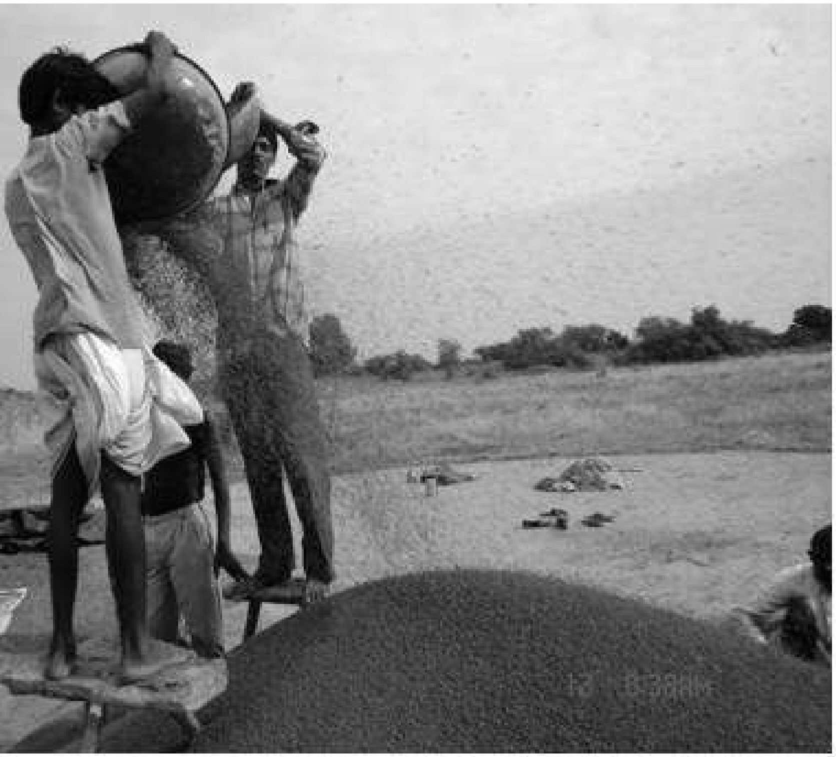

प्राकृत कृषि
GVNML
[NATURAL AGARICULTURE]
ऐसी कृषि जिसमें जीवों की हत्या नही संरक्षण होता है।
ऐसी कृषि जिसमें पेड़ो को हटाया नही लगाया जाता है।
प्रकृति के साथ जिये, विरूद्ध नही ।

प्रकृती और खेती

वर्षा जल संग्रहण से लघु सिंचाई

प्रकृती और खेती

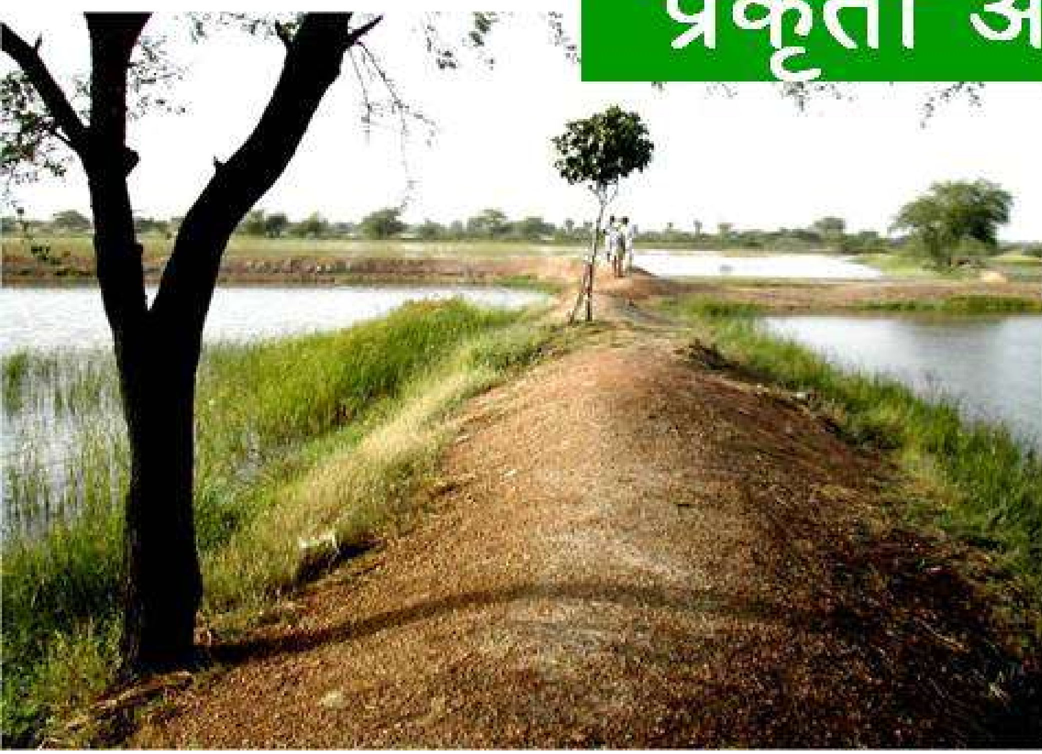

प्रकृती और खेती

लापोडिया : बाळा (छोटी नदी) में प्रत्येक दो किलोमीटर में छोटे–छोटे एनीकट बनने से नदी सदाबहार रहती है।

प्रकृती और खेती

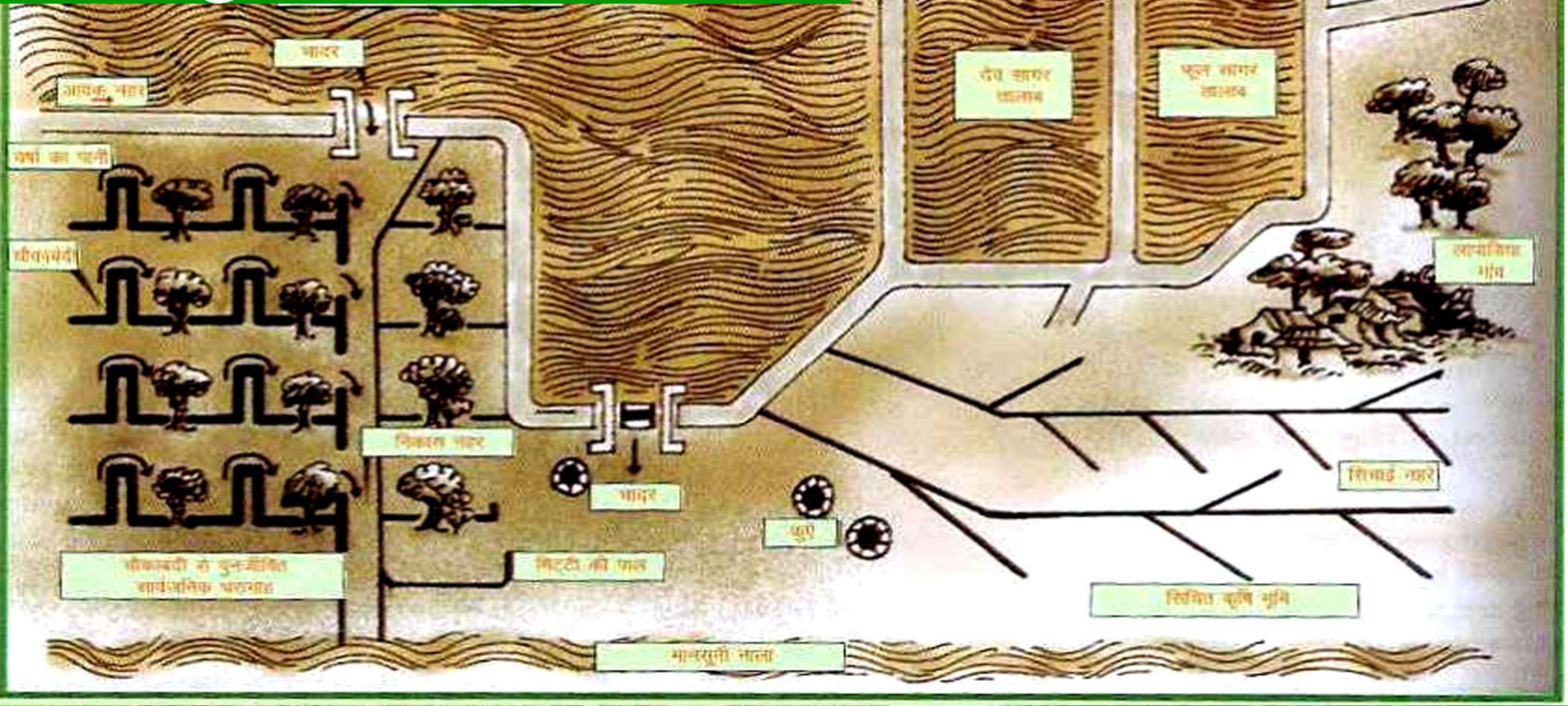

वर्षा जल के सहेजने से भू–जल से भरपुर हुआ क्षेत्र

प्रकृती और खेती

लापोड़िया : खरीफ की बारानी खेती से सम्पन्न खेत, बगेर भुजल निकाले खेती

प्रकृती और खेती

लापोड़िया : रबि की बारानी खेती से सम्पन्न खेत, बगेर भुजल निकाले खेती

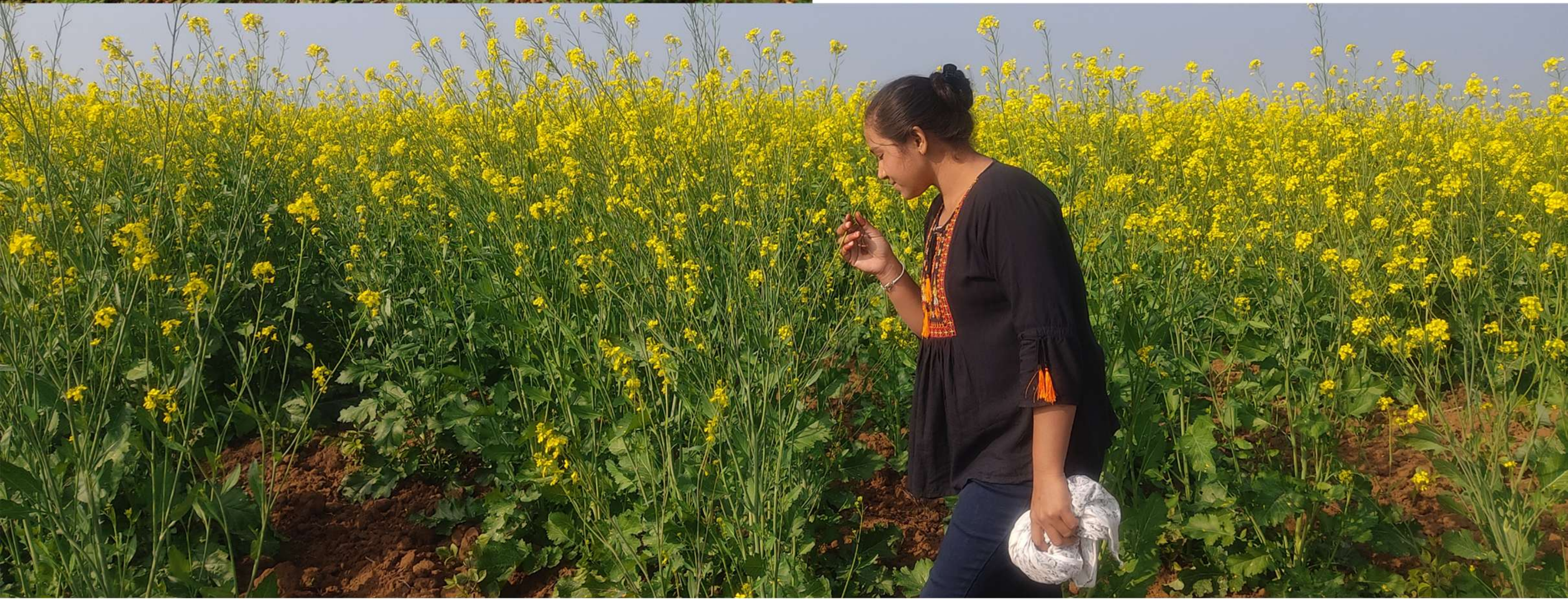

प्रकृती और खेती

लापोडिया : गूगल मेप से लिया सदाबहार बाळा (छोटी नदी) का चित्र

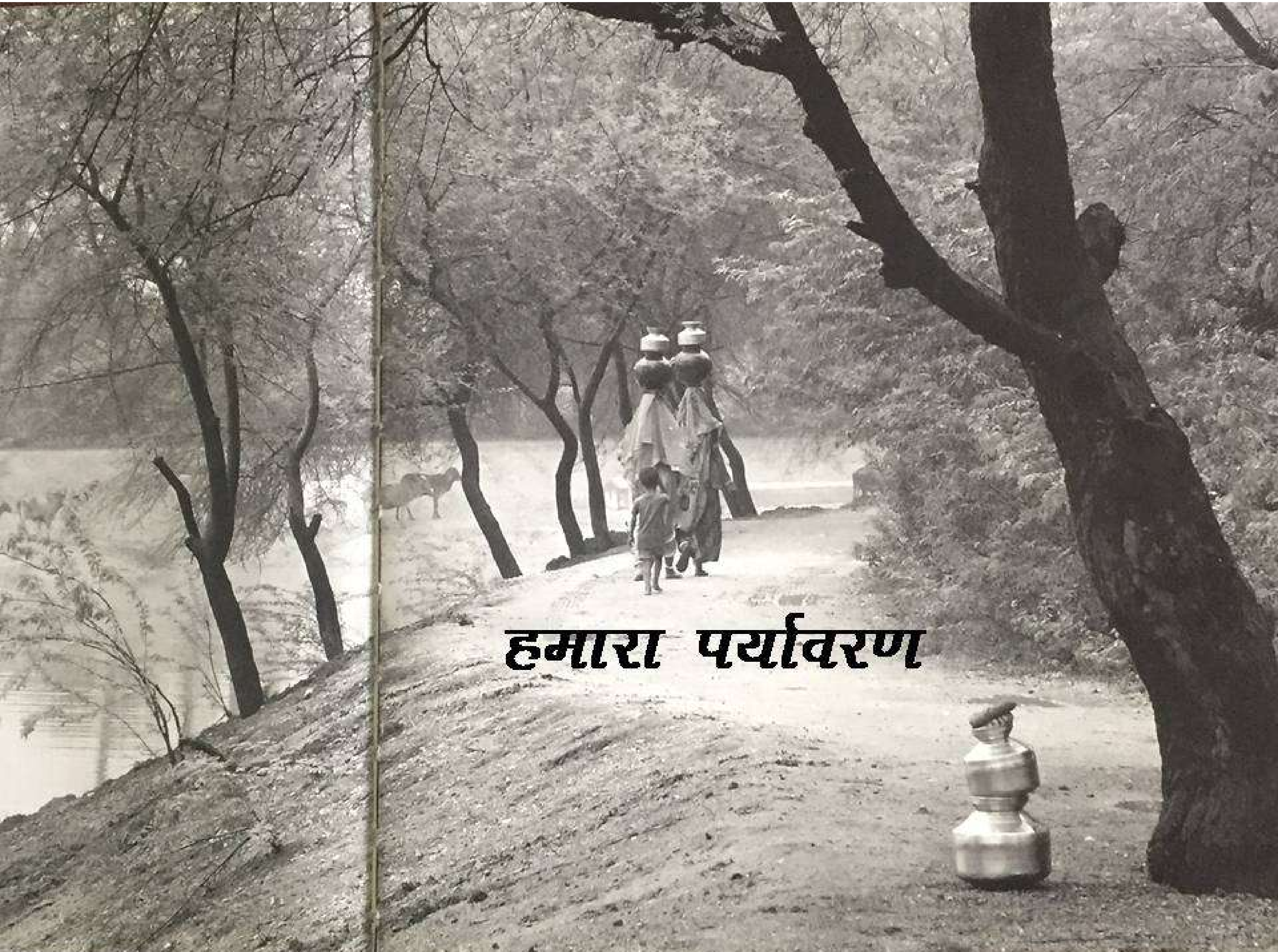

हमारा पर्यावरण

वन्य जीव संरक्षित क्षैत्र
यह निजी क्षैत्र है। परन्तु यहां वन्य जीव पूर्ण रूप से
सुरक्षित है। कोई तेज आवाज नही, कोई शिकार
नही, कोई कीटनाशक या जीवघातक प्राणाली नही
अपनायी जाती है। इसे आप भी शुरू करे।

एक खुला चिडियाघर
इस गोचर मे वन्य जीवो को सताते नही
है, मारते नही है। पेड़ झाडिया नही
काटते है। अतिक्रमण भी नही करते है
ऐसा कोई करता है तो उसे सजा
मिलती है।
ग्राम- लापोड़िया दूदू जयपुर

हमारा पर्यावरण

GVNML
सार्वजनिक स्थल
चुहाघर
हर जीव की रक्षा करे, चुहे को भी न
मारे पकड़ कर यहां छोडे।
अहिंसा ही सबसे बड़ा धर्म है।

GVNML
आग्रह
सार्वजनिक स्थलो को सब मिलकर बंचाये
इन पर कब्जा नही करे।
पक्षी, जानवर, पेड़ बीज सबकी रक्षा करे।
कम से कम 7 दिन श्रमदान करे।

हमारा पर्यावरण

हमारा पर्यावरण

गांव का वन

हमारा पर्यावरण

हमारा पर्यावरण

हमारा पर्यावरण

- जैव विविधता बढ़ी है व चारागाह में 34 प्रकार की घास आ रही है।
- दुर्लभ व लुप्त प्रायः पक्षी संरक्षित है।

एक गांव ने बचाए, बड़े कानों के उल्लू

प्रकृति और जीव-जन्तुओं को बचाने में जुटे ग्रामीण

विनोद सिंह चौहान

जयपुर, 26 दिसम्बर। नेचर से प्रेम करने वालों के लिए खास और खुश खबर! दूदू के पास एक गांव के लोगों के प्रकृति प्रेम ने नष्ट होती प्रकृति और जीव-जन्तुओं को नया जीवन दे दिया है। राजस्थान के लिए सबसे महत्वपूर्ण माने जा रहे ग्रेट होर्न्ड आऊल यानि बड़े कानों वाले उल्लू सहित दर्जनों पक्षी और वनस्पतियों का यहां संरक्षण किया जा रहा है। इससे उत्साहित वन विभाग ने इस गांव में वनस्पतियों और पशु-पक्षियों की जानकारी जुटाने और उन पर शोध का काम हाथ में लिया है।

दूदू से 15 किलोमीटर दक्षिण में बसे लापोड़िया गांव मे 20 वर्षों से जीवीएनएमएस संस्था गांव के लोगों को साथ लेकर भूमि सुधार और जल संरक्षण के कार्य में लगी है। जब संस्था ने प्रकृति संरक्षण का कार्य हाथ में लिया तो वन विभाग भी उसके साथ हो लिया। वन विभाग के आला अधिकारियों ने लापोड़िया के दौरे में पाया कि गांव के लोग वास्तव में प्रकृति संरक्षण में लगे हुए है। विभाग के प्रधान मुख्य वन संरक्षक अभिजीत घोष ने भी प्रकृति संरक्षण के लिए किए गए कार्यों की सराहना की है। विभाग ने अब इस क्षेत्र में दिखाई दे रहे पशु-पक्षियों और वनस्पतियों की जानकारी और शोध का कार्य हाथ में लिया है। विभाग ने पक्षी विशेषज्ञ सोहनलाल सैनी को वहां भेजा। दस दिन के पैदल भ्रमण और शोध से पता चला है कि यहां जैविक विविधता के कई घटक हैं, जिसमें करीब 84 प्रकार के पक्षी, 133 प्रकार की वनस्पतियां, 29 प्रकार की वनोषधियां, 14 प्रकार के स्तनधारी प्राणी, 10 प्रकार के रेंगने वाले जंतु और 16 प्रकार के कीट-पतंगों की पहचान की गई है। सैनी ने एक ही स्थान पर आठ बड़े कानों वाले उल्लू देखे, जो पहले राज्य में नहीं देखे गए।

गांव में पशु-पक्षी व कीट-पतंगे

स्तनधारी	रेंगने वाले जंतु	कीट-पतंगे
भेड़िया	दीमम छिपकली	ड्रेगन फ्लाई
गीदड़	भूरी छिपकली	गिरगिट
लंगूर	चट्टानी छिपकली	बगस, बीटल
बूच	पाटागोह	आंट, मोथ
नेवला	वामणी	सिकाडा
भौंर	धारिया वामणी	ग्रास होपर
लोमड़ी	दुमही	माइटस, स्पाइडर
भाऊ चूहा	धामण	स्कॉर्पियन
रोजड़ा	काला नाग	फायर फ्लाई

मेरे देश का गांव

धरती जतन यात्रा

श्रद्धाकर्म धरती जतन

धरती जतन अभियान

श्रृद्धाकर्म से पर्यावरण संरक्षण का अनवरत जन अभियान

यात्रा का प्रयोजन

ग्राम विकास नव युवक मण्डल लापोडिया की स्थापना के लगभग एक दशक बाद, स्वयं सेवकों और समर्पित कार्यकर्ताओं की वार्षिक योजना बैठक में यह सुझाव दिया गया कि "पदयात्रा" की थीम का उपयोग जनसंचार, सूचना संग्रह और जगरूकता बढ़ाने के लिए किया जाए। इस बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों ने इस विचार का समर्थन किया, क्योंकि यह एक प्रभावी माध्यम था। जिसके द्वारा हम ग्रामीण समुदायों के बीच महत्वपूर्ण मुद्दों को उजागर कर सकते थे।

पदयात्रा का उद्देश्य केवल लोगों को शिक्षित करना नहीं है, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि वे उन समस्याओं का विश्लेषण कर सकें जिनका सामना वे अपने दैनिक जीवन में कर रहे है। यह यात्रा न केवल जानकारी का आदान प्रदान करने का एक साधन है, बल्कि यह एक ऐसा मंत्र भी है जहां लोग अपने अनुभव साझा करते है और सामूहिक रूप से समाधान खोजने की दिशा में कदम बढ़ाते है।

जी.वी.एन.एम.एल. का मुख्य लक्ष्य मानव और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करना है, जिससे एक बेहतर पर्यावरण का निर्माण हो सके। इस दिशा में 1977 से कई पहल और प्रयास किए जा रहे है। संगठन ने विभिन्न कार्यक्रमों और अभियानों के माध्यम से लोगो को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक किया है। विशेष रूप से 1987 से हमने सामाजिक उद्देश्य की पहल "धरती जतन यात्रा" की शुरूआत की है।

भारतीय परम्परा में शुभ अवसरों पर भूमि, तालाब, नदी और वृक्षों का पूजन एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रथा है। यह न केवल धार्मिक आस्था का प्रती है, बल्कि यह हमारे पर्यावरण के प्रति हमारी जिम्मेदारी और कर्तव्यों का भी बोध कराता है। अर्थववेद में भूमि को माता एवं मनुष्य को उसकी संतान बताया गया है एवं प्राकृतिक संसाधनों के प्रति मनुष्यों के कर्तव्यों का बोध कराया गया है।

प्राकृतिक संसाधनों के प्रति हमारी श्रद्धा और कर्तव्य का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है। अन्न और जल ग्रहण करने वाले सभी मनुष्यों को इन संसाधनों की महत्ता को समझना चाहिए और उनके संरक्षण के लिए सक्रिय रूप से प्रयास करना चाहिए। यह न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामूहिक रूप से भी आवश्यक है, ताकि हम आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ और समृद्ध पर्यावरण छोड़ सकें।

इस संदर्भ में, धरती जतन यात्रा जैसे आयोजनों में भाग लेना एक महत्वपूर्ण कदम है। यह यात्रा हमें प्राकृतिक संसाधानों के प्रति हमारी घटती श्रद्धा को पुनस्थापित करने का अवसर प्रदान करती है। कार्तिक माह, जो भारतीय संस्कृति में विशेष महत्व रखता है, इस प्रकार के आयोजनों के लिए एक उपयुक्त समय है। इस माह में हम अपने पूर्वजों की परम्पराओं का सम्मान करते हुए, प्राकृतिक संसाधनों के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझ सकते है।

धरती जतन यात्रा के दौरान होने वाले कार्यक्रम

कार्यक्रम में अपने पड़ौसी, रिस्तेदारों एवं मित्रों को बुलाये। समायानुकुल गाजे बाजे एवं गीतों के साथ यात्रा का गांव में स्वागत करें। यात्रा में निम्न कार्यक्रम पूर्ण विधि विधान से सम्पन्न करे। समाचार स्थानीय अखबार में देवे एवं सोशल मिडिया पर डाले।

पूजन : तालाब, पेड़, गौचर, कुआ, बावड़ी अपने गांव के जल स्त्रोतो एवं चारागाह का पूजन करें एवं इन्हे इन्द देव से आराधना करे कि इन्हे सरसब्ज रखे।

पेड़ो के रक्षा सूत्र : हाथ में मोली का धागा पकड़कर संकल्प लेकर, पेड़ो के रक्षा सूच बांधा जावे एवं गांव में हरियाली के लिए हर वर्ष वृक्षारोपण का संकल्प लेवे।

धरती जतन पुरस्कार : प्राकृतिक संसाधानों के संरक्षण और सुधार के स्वयं सिद्व प्रयासों को वर्ष भर ढूंढा जाता है और इन्हे प्रोत्साहित करने के लिए यह पुरस्कार दिया जाता है।

संकल्प : सभी गांव के लोग मोली का धागा पकडे एवं पूर्व निर्धारित संकल्प पत्र के अनुसार संकल्प लेवे फिर अपने हाथ में आये धागे तो तोडकर, धागे को पेड़ से बांध देवे।

आप सभा अथवा ग्राम सभा का आयोजन : धरती जतन यात्रा के सभी कार्यक्रम सम्पन्न करने के पश्चात उचित जगह का निर्धारण आम सभा की जावे। जिसमें गांव के विकास के लिए प्लान तैयार किया जावें।

संकल्प दोहरायें

भारत मेरा देश है। मैं अपने देश में, अपने स्थान पर प्राकृतिक संसाधनों के प्रति कर्तध्यता धारण करने के लिए सदैव कटिवद्व हूँ, और मैं संकल्प लेता हूँ। मैं आज सूरज भगवान, धरती माता और इन्द्र देवता को साक्षी मानकर यह शपथ लेता हूँ कि सभी महत्वपूर्ण हरे पेड़ो की रक्षा करूंगा। हरियाली को बढ़ावा दूंगा। चारागाह, तालाब, नाडियों को सुन्दर बनाने का प्रयास करूंगा। सार्वजनिक स्थलों व रास्तों को स्वच्छ रखूंगा। जल का सदुपयोग करूंगा। वन्य जीवों को बचाऊंगा। गांव की विकास प्रक्रिया में सक्रिय भाग लूंगा।

मेरे देश का गांव

धरती जतन यात्रा

"श्रृद्धा कर्म – ढूंढाड जतन"

GVNML

धरती जतन यात्रा

धरती जतन पदयात्रा

मेरे देश का गांव

धरती जतन पदयात्रा

विचार गोष्ठी

संकल्प

तालाब पुजन

मेरे देश का गांव

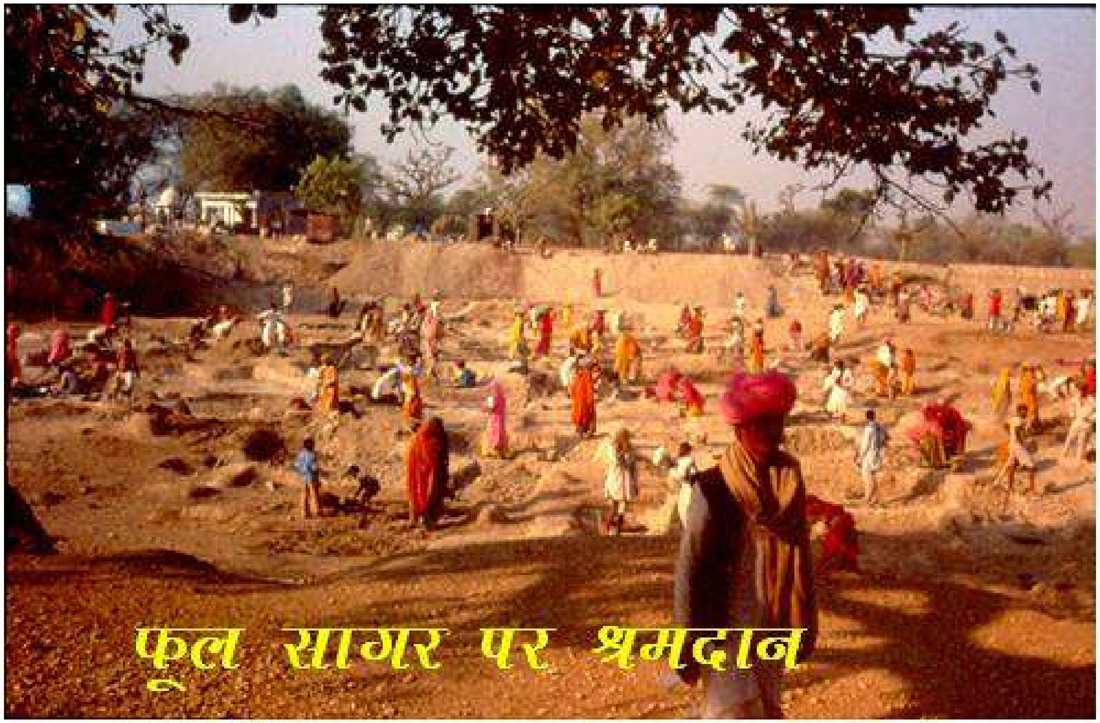

श्रमदान के बीच चर्चा

पदयात्रा में पेड़ पुजन

गांव से गांव सिखते हुये

मेरे देश का गांव

गांव के तालाब में पुष्कर सरोवर का जल अर्पण करते हुये

विदेशियों को हिन्दुस्तानी तरिका सिखाते हुये

मेरे देश का गांव

अलग अलग पदयात्रा टोलियों का संगम व अनुभव बाटंना

संस्था का संक्षिप्त परिचय–विजन एवम् मिशन

विजन

ग्रामीण क्षेत्रो में जीवन की गुणवत्ता बढाने के लिए आजिविका को सुरक्षित करने और समुदाय को आत्म निर्भर बनाने के लिए स्थानीय पारिस्थितिकी तन्त्र को मजबूत बनाना।

मिशन

- **गांव की गौचर भूमि और निजी कृषि भूमि के प्रबन्धन से भूमि की गुणवत्ता में सुधार करना।**
- **नवीन व विशिष्ट तकनीको व प्रणालियों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर सतही व भुमिगत जल का संरक्षण करना।**
- **देशी वृक्ष, झाडी, घास प्रजातियों के उत्थान से स्थानीय जैव विविधता को संरक्षित करना।**
- **ग्रामीण आजिविका को सुरक्षित करते हुए जलवायु परिवर्तन के खतरे से निपटने के लिए फसल व पशुधन उत्पादन प्रणाली को सुदृढ करना।**
- **प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबन्धन के लिए स्थानीय प्रशासन को दक्ष व संवेदनशील बनाना तथा सकिय ग्राम संगठन खडे करना।**
- **ग्रामीण समुदायों के जीवन स्तर को उंचा करने के लिए सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा तक उनकी पहुच सुनिश्चित करना।**

संस्था का सरकार के साथ जुड़ाव

- राज्य चारागाह व बंजर भूमि विकास बोर्ड के सदस्य व बोर्ड की वर्किंग कमेटी के सदस्य
- राजस्थान ओडिट एडवाईजरी बोर्ड (SAAB) के सदस्य
- PHED में IEC गतिविधी के लिय राज्य सरकार के पेनल में
- MJSA (IWMP) के लिय राज्य सरकार के साथ PIA के रूप में कार्य कर रहै है।

संस्था का संक्षिप्त परिचय

संस्था के काम को पहचान देते प्रमुख पुरस्कार

अन्तराष्ट्रीय पुरस्कार

- अशोका फेलोशिप – 1997
- ईको वोलिन्टियर के रूप में चयन यू एन डी पी द्वारा – 1996

राष्ट्रीय पुरस्कार

- पद्मम श्री पुरस्कार 2023
- द्वितीय राष्ट्रीय जल पुरस्कार (बेस्ट एनजी ओ) – जल शक्ति मंत्रालय 2020
- राष्ट्रीय भू एवं जल संवर्धन पुरस्कार – 2007
- इन्दिरा प्रियदर्शिनी वृक्षमित्र पुरस्कार – 1994
- राष्ट्रीय युवा पुरस्कार – 1992

संस्था का संक्षिप्त परिचय

संस्था के काम को पहचान देते प्रमुख पुरस्कार

राज्य स्तरीय पुरस्कार

- राजीव गांधी पर्यावरण पुरस्कार – 2013
- राज्य भू एवं जल संरक्षण पुरस्कार – 2008
- राज्य भू एवं जल संरक्षण पुरस्कार – 2007
- जल मित्र पुरस्कार –2005

अन्य पुरस्कार एवं सम्मान

- सिल्वर अवार्ड (धीरूभाई अम्बानी मेमोरियल ट्रस्ट) – 2008
- राज्य स्तरीय द्वितीय डालमिया पानी पर्यावरण पुरस्कार – 2008
- एक्वा फाउन्डेशन ऐक्सिलेन्स पुरस्कार 2016
- राजा दुल्हे राय पुरस्कार – 2001
- महारानी पद्मनी पुरस्कार (जौहर समृति संस्थान) 2016

संस्था के कामो की चर्चा एवं सम्मान

संस्था का संक्षिप्त परिचय

अ. राजस्थान में लगभग 3150 गांवो के 6 लाख परिवारो के साथ काम है।

ब. सामुदायिक संगठनो के साथ कार्य

ग्राम विकास समितियां – 110

स्वयं सहायता समूह – 482

ग्रामीण जल स्वास्थ्य एवं स्वच्छता समितियां – 2203

स. भू एवं जल संरक्षण एवं संवर्धन सरचनाओ का निर्माण

चरागाह विकास कार्य (चौका सिस्टम द्वारा) – 7540 हैक्टर

मेडबन्दी – 36,000 हैक्टर

तालाब (खुदाई गहरीकरण व नया निर्माण) संख्या में – 230

नाडा नाडी (सार्वजनिक व निजी) संख्या में – 1120

चैकडेम, एनीकट संख्या में – 38

कुल जमीन जहां पर वर्षा जल प्रबन्धन का काम हुआ – 53320 हेक्टर

पेयजल टांका संख्या में – 126

जंगल हॉल संख्या में – 2

धन्यवाद
ये सारे प्रयास
ओजोन परत को
समर्पित
पधारोंसा म्हारें गांव – लापोडिया